श्री देवभद्रसूरि रचित

चतुर्विंशति-जिन स्तोत्राणि

म० विनयसागर

वाणीकी सफलता और हृदय की अनुभूति का उद्रेक ही स्तोत्रों का प्रमुख विषय रहा है। जिनेश्वरों के पाँच कल्याणकों के अतिरिक्त उनसे सम्बन्धित जितनी भी वस्तुएँ/स्थान हैं, उनके माध्यम/वर्णन से कृतकृत्य होना ही जीवन की सफलता का आधार है। प्रस्तुत स्तोत्रों में उनके गुणगौरव यशोकीर्ति का उल्लेख कम है, उनके वर्णनों/स्थानों का उल्लेख अधिक है।

इस कृति की दुर्लभ प्रति श्री लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, मुनिराजश्री पुण्यविजयजी के संग्रह में उपलब्ध है। सूचीपत्र भाग-१, क्रमाङ्क १३७८, परिग्रहणाङ्क नम्बर ७२५४ (१) पर सुरक्षित है। पत्र संख्या ५ है। साईज ३० x ११-४, पंक्ति २० और अक्षर संख्या ५८ है। लेखनकाल संवत् १५५० है। इस स्तोत्र का प्रारम्भ - **सिरि अजियनाह वइसाह** - से प्रारम्भ होता है। गाथा संख्या १९२ है।

प्रणेता

प्रथम ऋषभदेव स्तोत्र गाथा ८ में **देवभद्दाइं** और वर्द्धमान स्तोत्र गाथा ८ में **देवभद्दाइं** शब्द का रचनाकार ने प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट है कि इस कृति के प्रणेता देवभद्रसूरि हैं। इसमें कहीं भी अपनी गुरु-परम्परा और गच्छ का उल्लेख नहीं किया है। लिखित प्रति १५५० की होने के कारण इससे पूर्व ही देवभद्रसूरि के सम्बन्ध में विचार आवश्यक है।

१. देवभद्रसूरि - नवाङ्गीटीकाकार श्री अभयदेवसूरि के विनेय शिष्य हैं। इनका दीक्षा नाम गुणचन्द्रगणि था और आचार्य बनने के पश्चात् देवभद्रसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके द्वारा प्रणीत वीरचरित्र, कहारयणकोष (रचना सं. ११५८) और पार्श्वनाथ चरित्र (रचना सं. ११६५) के प्राप्त हैं।

२. देवभद्रसूरि - चन्द्रगच्छ, बृहद् गच्छ, पिप्पलक शाखा के प्रवर्तक हैं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो विजयसिंहसूरि, देवभद्रसूरि, धनेश्वरसूरि की परम्परा में हैं । इनका समय १२वीं शताब्दी है ।

३. देवभद्रसूरि - चन्द्रगच्छीय, शान्तिसूरि, देवभद्रसूरि, देवानन्दसूरि की परम्परा में हैं । सत्ताकाल १३वीं शती है ।

४. देवभद्रसूरि - मलधारगच्छीय श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य हैं । और संग्रहणी वृत्ति इनकी प्रमुख रचना है । समय १२वीं शताब्दी ।

५. देवभद्रसूरि - पूर्णिमापक्षीय विमलगणि के शिष्य हैं । दर्शनशुद्धि-प्रकरण की टीका प्राप्त है जिसका रचना संवत् १२२४ है ।

६. देवभद्रसूरि - राजगच्छीय अजितसिंहसूरि के शिष्य है । इनकी प्रमुख रचना श्रेयांसनाथ चरित्र है और इनका सत्ताकाल १२७८ से १२९८ है ।

साहित्य में इन छः देवभद्रसूरि की उल्लेख प्राप्त होता है । क्रमांक २ और ३ की कोई रचनाएँ प्राप्त नहीं हैं । क्रमांक ४-५ जैन प्रकरण साहित्य के टीकाकार हैं और क्रमांक ६ कथाकार हैं । क्रमांक २-६ तक इस स्तोत्र के प्रणेता हों सम्भावना कम ही नजर आती है । मेरे नम्र विचारानुसार इस कृति के प्रणेता श्री अभयदेवसूरि के विनेय ही होने चाहिए ।[१]

देवभद्रसूरि खरतरगच्छविरुद धारक श्री जिनेश्वरसूरि के शिष्य उपाध्याय श्री सुमतिगणि के शिष्य हैं । इनका दीक्षानाम गुणचन्द्रगणि था । आचार्य बनने के पश्चात् देवभद्रसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए । श्री अभयदेवसूरि के पास इन्होंने शिक्षा-दीक्षा एवं आगमिक अध्ययन किया था इसीलिए गणधरसार्द्धशतक बृहद्वृत्तिकार सुमतिगणि और खरतरगच्छ गुर्वावलीकार श्री जिनपालोपाध्याय ने अभयदेवसूरि के पास विद्या ग्रहण करने वाले और उनकी कीर्तिपताका फैलाने वाले शिष्यों का उल्लेख करते हुए लिखा है :-

सत्तर्कन्यायचर्चार्चितचतुरगिरिः श्रीप्रसन्नेन्दुसूरिः,
सूरिः श्रीवर्धमानो यतिपतिहरिभद्रो मुनीड्देवभद्रः ।

---

१. महावीर स्वामीके स्तवमें पांच ही कल्याणककी बात है, ६ की नहीं; अतः यह कृति किसी अन्य गच्छ के देवभद्रसूरिकी हो यह अधिक सम्भवित है । **शी.**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्याद्या सर्वविद्यार्णवसकलभुवः सञ्चरिष्णूरुकीर्तिः,
स्तम्भायन्तेधुनापि श्रुतचरणरमाराजिनो यस्य शिष्याः ॥

इस पद्य का उल्लेख श्री जिनवल्लभगणि ने चित्रकूटीय वीरचैत्य प्रशस्ति में भी किया है। देवभद्रसूरि प्रसन्नचन्द्रसूरि के अत्यन्त कृपापात्र थे।

आचार्य देवभद्रसूरि जैनागमों के साथ कथानुयोग के भी उद्भट विद्वान् थे। उनके द्वारा प्रणीत निम्न ग्रन्थ प्राप्त होते हैं :-

महावीर चरित्र (११३९)	कथारत्नकोश (११५८)
पार्श्वनाथ चरित्र (११६८)	प्रमाण प्रकाश
संवेगमञ्जरी	अनन्तनाथ स्तोत्र
चतुर्विंशति जिन स्तोत्राणि(?)	स्तम्भतीर्थ पार्श्वनाथ स्तोत्र
पार्श्वनाथ दशभव स्तोत्र	वीतराग स्तोत्र

जिनचरित्र और स्तोत्रों को देखते हुए यह कृति भी इन्हीं की मानी जा सकती है।

वर्ण्य-विषय

प्रस्तुत स्तोत्रों में २४ तीर्थंकरों के ३२ स्थानकों का वर्णन है। प्रत्येक स्तोत्र में तीर्थंकरों का नामोल्लेख करते हुए ८ गाथाओं में यह वर्णन किया गया है। स्थानकों का वर्णन निम्न है :-

तीर्थंकर नाम - १. च्यवन स्थान, २. च्यवन तिथि, ३. जन्मभूमि, ४. जन्मतिथि, ५. पितृनाम, ६. मातृनाम, ७. शरीर वर्ण, ८. शरीर माप, ९. लाञ्छन, १०. कुमारकाल, ११. राज्यकाल, १२. दीक्षा तप, १३. दीक्षा तिथि, १४. दीक्षा स्थान, १५. पारणक, १६. दाता, १७. दीक्षा परिवार, १८. छद्मस्थ काल, १९. ज्ञान नगरी, २०. ज्ञान तिथि, २१. गणधर संख्या, २२. साधु संख्या, २३. साध्वी संख्या, २४. शासन देव, २५. शासन देवी, २६. भक्त, २७. दीक्षा पर्याय, २८. आयुष्य, २९. मोक्ष परिवार, ३०. अन्तरकाल, ३१. निर्वाण तिथि, ३२. निर्वाण धाम। विस्तृत जानकारी के लिए पृथक् से इन ३२ स्थानकों का कोष्ठक यन्त्र परिशिष्ट में दिया गया हैं वहाँ देखें।

स्थानकों का उल्लेख किस ग्रन्थ के आधार से किया गया है ? इसका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई उल्लेख नहीं है। तथापि आगम साहित्य, प्रकीर्णक साहित्य, तीर्थंकर चरित्र (प्रथमानुयोग), आदि विभिन्न ग्रन्थों में जो स्थानकों सम्बन्धि उल्लेख मिलते हैं उनका यहाँ एकीकरण किया गया हो ऐसा माना जा सकता है।

श्रीशीलाङ्काचार्य (९वीं शती) रचित **चउपन्न-महापुरुष-चरियं** में शासनदेव, शासनदेवी, पारणा कराने वाले और प्रमुख भक्त आदि का उल्लेख न होने से यह निश्चित है कि यह उससे परवर्ती रचना है।

श्रीशीलाङ्काचार्य रचित चउप्पन्न-महापुरुष-चरियं और कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य रचित त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र में वर्णित स्थानकों में अन्तर हो सकता है। जैसे - श्री शीलाङ्काचार्य, देवभद्रसूरि और हेमचन्द्राचार्य ने श्रेयांसनाथ का अन्तरकाल ६६,२६००० सागरोपम कम माना है, किन्तु त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र संस्कृत में ६६,२६००० ही माना है किन्तु सम्पादक श्री विजयशीलचन्द्रसूरिजी ने पाठान्तर में ६६,३६००० स्वीकृत किया है। गुजराती और हिन्दी अनुवादों में ६६,३६००० ही देखने में आ रहा है।

श्रीजिनवल्लभसूरि ने **चतुर्विंशति जिन-स्तोत्राणि** में केवल छः स्थानकों का ही उल्लेख किया है। परवर्ती काल में स्थानकों का वर्णन क्रमशः बढ़ते हुए १७० तक पहुँच चुका था। श्रीसोमतिलकसूरि द्वारा संवत् १३८७ में रचित **सप्ततिशत्तस्थानप्रकरणम्** में १७० स्थानों का वर्णन है।

मुनिराज श्री पुण्यविजयजी के संग्रह की वर्तमान समय में प्राप्त प्रति में अजितनाथ स्तोत्र से यह वर्णन प्रारम्भ होता है। जबकि आज से ५५ वर्ष पूर्व जिस प्रति के आधार से प्रतिलिपि की थी उसमें ऋषभदेव वर्णनात्मक ८ गाथाएँ भी थी। यह कृति अद्यावधि अप्रकाशित थी। अतः पाठकगण इसका रसास्वादन करें, इसी दृष्टि से प्रस्तुत है।

सिरि रिसहणाह-थुत्तं

परिसिद्धिकए **सिरिरिसहनाह** ! सव्वट्ठसिद्धिमुज्झेउं ।
अवइन्नोसि अउज्झं कसिणं चउत्थीइ आसाढे ॥१॥
नाहि-मरुदेवि-तणओ जाओ चित्तट्ठमीइ बहुलाए ।
पंच धणुस्सयदेहो कणयपहो तंसि वसहंको ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमरोसि पुव्वलक्खे वीसं पुहईसरो य तेवट्ठिं ।
कसिणट्ठमीइ चित्ते सह चउहिं नरिंदसहसेहिं ॥३॥
सिद्धत्थवणंमि तुमं छट्ठेण विणिग्गओसि वरिसंते ।
सेयंसाउ तुहासी इक्खुरसो पढमपारणए ॥४॥
वाससहस्सं अच्छिय छउमत्थो फग्गुणस्स कसिणाए ।
इक्कारसीइ पत्तो केवलनाणं पुरिमताले ॥५॥
तुह गणहरा य चुलसी साहु-सहस्सा य साहुणि तिलक्खं ।
गोमुह-अप्पडिचक्का भरहेसरचक्किणो भत्ता ॥६॥
दिक्खा य पुव्वलक्खं आउं चुलसीइ पुव्वलक्खाइं ।
अवसप्पिणि तइयऽरए सेसे गुणनवइ पक्खेहिं ॥७॥
कसिणाइ तेरसीए माहे सह दसहिं मुणिसहस्सेहिं ।
अट्ठावयम्मि निव्वुय! देहि महं **देव ! भद्दाइं** ॥८॥

❀

सिरि अजियणाह-थुत्तं

सिरिअजियनाह ! वइसाह-सुद्ध-तेरसि विमुक्कविजयसुहो ।
लोयहियट्ठमवज्झाइ तं पवन्नोसि गब्भदुहं ॥१॥
भविय जियसत्तु-विजया-तणओ माहट्ठमीए सुद्धाए ।
गयचिंध अद्धपंचम धणुसयतणु कणयसंकास ॥२॥
कुमरत्ते अट्ठारस लक्खा पुव्वाण गमिय रज्जेउ ।
तेवन्नमंगसहिया माहे सुद्धाइ नवमीए ॥३॥
सहसंबवणे छट्ठेण निग्गओ तंसि नरसहस्सजुओ ।
अन्नदिणे परमन्नं दिण्हं तुह बंभदत्तेण ॥४॥
बारसवरिसाणंते पोस-सिय-इक्कारसीइ तम्मि वणे ।
उप्पन्ननाण तुमए पणनवई गणहरा विहिया ॥५॥
साहू लक्खं अज्जाउ तिन्नि लक्खाइं तीस सहसा य ।
भत्ता तुह महजक्खो अजियबला सगरचक्की य ॥६॥
वयमंगूणं लक्खं पुव्वा आउं बिसत्तरी लक्खा ।
पन्नास अयर कोडी लक्खेसु गएसु उसभाओ ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तसिय-पंचमीए सम्मेए तं मुणीण सहसेण ।
सेलेसीमारुहिउं जत्थ गओ तत्थ मन्नेसु(मं नेसु) ॥८॥

सिरि संभवणाह-थुत्तं

सिरिसंभवजिण ! सत्तम ! सत्तम-गेविज्जयाउ सावत्थि ।
फग्गुणसियट्ठमीए पत्तोसि सुहाय वसुहाए ॥१॥
जाओ जिआरि-सेणाण सुद्धमग्गसिरचउदसीइं तुमं ।
कणयतुलियंग चउसयधणुतुंग तुरंग-लंछणय ॥२॥
पन्नरस-पुव्वलक्खे कुमरो चउचत्तपुव्वलक्खा य ।
चउरंगाणि य राया भविऊणं मणुय-सहसेण ॥३॥
मग्गसिर-पुन्निमाओ कयछट्ठो निग्गओ सहस्संबे ।
बीयदिणे परमन्नं सुरिंददत्ताउ पत्तोसि ॥४॥
चउदस-वरिसंते पंचमीइ कसिणाइ कत्तिए नाणं ।
तम्मि वणे जणिय कयं गणहारिसयं दुरुत्तरयं ॥५॥
लक्खदुगं साहूणं अज्जा छत्तीससहसलक्खतिगं ।
नाह ! तुह तिमुह-दुरियारि मित्तसेणा सया भत्ता ॥६॥
पुव्वाण लक्खमेगं चउरंगूणं तवेण खविऊणं ।
अजियजिणाओ सागर-कोडी-लक्खाण-तीसाए ॥७॥
चित्तसियपंचमीए तं निट्ठिय सट्ठि-लक्ख-पुव्वाउं ।
संजयसहस-समेयं-सम्मेए निव्वुयं वंदे ॥८॥

सिरि अभिणंदणणाह-थुत्तं

सरिमो **सिरिअभिनंदण**जिणिंद ! वइसाहसियचउत्थीए ।
जय नाह ! जयंताउ तुज्झ अवज्झाइ अवयरणं ॥१॥
संवर-सिद्धत्थाणं कणयपहो माह-सुद्धबीयाए ।
अद्ध-चउत्थ-धणुस्सयतणु वानरचिंध जाओसि ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्धतेरसकुमरोसि पुव्व-लक्खाइं सड्ढछत्तीसं ।
अट्ठंगाणि य राया माहे सिय-बारसीइ तुमं ॥३॥
छट्ठेण गहियदिक्खो सहसंबवणे नरिंदसहसेणं ।
पत्तो पायसमसणं बीयदिणे इंददत्ताओ ॥४॥
अट्ठारस-वरिसेहिं सिय-पोस-चउद्दसीइ तम्मि वणे ।
जायं नाणं तह सोलसोत्तरं गणहराण सयं ॥५॥
मुणि लक्ख-तिगं अज्जाण तीससहसाहियं तु छल्लक्खं ।
जक्खेसर-कालीओ तुह भत्ता मित्तविरिओ य ॥६॥
गय-पुव्व-लक्खं अट्ठंगूणं ठिओसि सामन्ने ।
संभवनाहाउ गएसु अयर-दसकोडि-लक्खेसु ॥७॥
पन्नास-पुव्व लक्खे जीविय सियअट्ठमीइ वइसाहे ।
मुणि-सहसजुयं सिद्धं तुमं नमंसामि सम्मेए ॥८॥

❀

सिरि सुमइणाह-थुत्तं

पणमामि **सुमइसामिय** ! कामिय वसुहोवयारभ(म?)वयारं ।
सावण-सिय-बीयाए जयंतओ तुह अवज्झाए ॥१॥
तं मेह-मंगलाणं वइसाह-सियट्ठमीइ जाओसि ।
अइजच्च-कंचणनिभो तिसय-धणुच्चो सकुंचो य ॥२॥
कुमरोसि पुव्वलक्खे दस नरनाहो य बारसंगजुयं ।
इगुणत्तीसं वइसाह-सुद्ध-नवमीइ सहसंबे ॥३॥
कयनिच्चभत्त नर-सहससंगओ निग्गओसि बीयदिणे ।
पउमाउ पत्तपायस वासा वीसं ठिओ छउमे ॥४॥
तम्मि वणे वरनाणं चित्त-सिय-इक्कारसीइ पत्तोसि ।
गणहरसयं मुणीणं लक्ख-तिगं वीससहसजुयं ॥५॥
अज्जाण पंच-लक्खं तीस-सहस्साहियं तए विहियं ।
तुह भत्तिपरा तुंबुरु-महयाली सव्वविरियनिवा ॥६॥
लक्खा अ बारसंगं घुट्ठाण वयं तु चत्तलक्खाइं ।
अभिनंदणाउ जिणओ नवसागरकोडि-लक्खेहिं ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहुसहस्सेण समं सम्मेए चित्त-सुद्ध-नवमीए ।
पत्तोसि सुहमणंतं तं देसु ममावि किमऽजुत्तं ॥८॥

❀

सिरि पउमप्पहणाह-थुत्तं

सिरिपउमप्पह ! पुहइं पहासिउं माह-बहुलछट्ठीए ।
सव्वुवरिम-गेविज्जा तुमं पवन्नोसि कोसंबि ॥१॥
जाओसि धर-सुसीमाण कत्तिए बहुल-बारसीइ तुमं ।
अड्ढाइज्ज-धणुस्सयपमाण कमलंक रत्तंगं ॥२॥
अद्धट्ठमा कुमारो लक्खा पुव्वाण सड्ढइगवीसं ।
सोलस अंगा यतिवो सह निव-सहसेण सहसंबे ॥३॥
छट्ठेण विणिक्खंतो पहु कत्तिय-कसिण-तेरसीइ तुमं ।
परमन्नं च पवन्नो बीयदिणे सोमदेवाउ ॥४॥
छम्मासंते नाणं तम्मि वणे चित्त-पुन्निमाए तए ।
लद्धूण कयं गणहर-सत्तहियसयं मुणीणं तु ॥५॥
तीस सहस्स-तिलक्खं अज्जाणं वीस सहस चउलक्खं ।
तुह सामि सेवगा कुसुम-अच्चुया अजियसेण-निवा ॥६॥
तुह वयमसोलसंगं लक्खं पुव्वाण तीस लक्खाऊ ।
सुमइ-जिणाणंतरमयर कोडि-नवई सहस्सेहिं ॥७॥
सम्मेए चउवीसहिएहिं तिहिं सएहिं समं ।
मग्गसिर-कसिण-इक्कारसीइ निव्वुय नमो तुज्झ ॥८॥

❀

सिरि सुपासणाह-थुत्तं

तिहुयणसिरिवास-**सुपाससामि** ! कसिणट्ठमीइ भद्दवए ।
मज्झिम उवरिमओ तुह चरणं भवियाण कुणउ सुहं ॥१॥
वाणारसीइ सिय-बारसीइ जिट्ठे पइट्ठ-पुहइ-सुओ ।
दुसय-धणू सियवर-सत्थियंक कणयप्पहो तेसिं ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वाण पंच लक्खा वीसंगजुयं च लक्ख चउदसगं ।
कुमर-नरनाहभावं अणुभविय नरिंद-सहसजुओ ॥३॥
सहसंबवणे कयछट्ठ जिट्ठ-सिय-तेरसीइ नीहरिओ ।
जिणचंद महिंदाओ बीयदिणे पायसं पत्तो ॥४॥
मासेहिं नवहि फग्गुण-सामलछट्ठीइ तम्मि उज्जाणे ।
नाणं लद्धूण कया पण-नवई गणहरा तुमए ॥५॥
साहूण तिन्नि लक्खा अज्जा चउ लक्ख तीस सहसा य ।
तुह भत्ता मायंगो संता तह दाणविरिओ य ॥६॥
पुव्वाणमवीसंगं लक्खं वयमाउ लक्ख वीसं च ।
पउमप्पहनाहाओ नव सागरकोडिसहसेहिं ॥७॥
कसिणए फग्गुण-सत्तमीइ पंचहिं सएहिं साहूणं ।
सम्मेयम्मि सिवं गय सिवगइं देहि मह नाह ! ॥८॥

❁

सिरि चंदप्पहणाह-थुत्तं

चंदप्पह ! पुहइमिमं मज्जंतिं तममुहंमि उद्धरिउं ।
तुह बहुल-चित्तपंचमि परिवज्जियवेजयंत नमो ॥१॥
चंदपुरीइ महायस ! पोसासिय-बारसीइ जाओसि ।
महसेण-लक्खमाणं चंदको चंदधवलोयं ॥२॥
तं सड्ढसयधणूसिय कुमरो पुव्वाण सड्ढलक्खदुगं ।
राया सड्ढछलक्खे चउवीसंगा य कयछट्ठो ॥३॥
नरसहसजुओ तं पोस-कसिण-तेरसि पवन्नसामन्नो ।
सहसंबे पत्तो सोमदत्त परमन्नमन्नदिणे ॥४॥
मासतिगंते कसिणाइ फग्गुणे सत्तमीइ तम्मि वणे ।
घाइचउक्कविमुक्केण तेणवइ गणहरा विहिया ॥५॥
साहू सड्ढदुलक्खा अज्जाउ असीइसहसलक्खतिगं ।
भत्तिरओ तुह विजओ भिउडी मघवं च महिनाहो ॥६॥
लक्खमचउवीसंगं कयवय दस पुव्व लक्ख सव्वाउं ।
सागरकोडिसएहिं नवहिं गएहिं सुपासाओ ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भद्दवय-कसिण-सत्तमि निम्महियाऽसेसकम्म सम्मेए ।
मुणिसहसजुओ तं निव्वुओसि मम निव्वुयं कुणसु ॥८॥

सिरि सुविहिणाह-थुत्तं

सिरिसुविहिनाह ! मह देहि वंछियं वंछियाइं पूरेउं ।
चविओसि आणयाओ तं फग्गुण-कसिण-नवमीए ॥१॥
कायंदीए रामा-सुग्गीवाणं सुओसि मयरंको ।
मग्गसिर-पंचमीए कसिणाए चंद-गोरंगो ॥२॥
धणुसयपमाण कुमरत्तणम्मि पन्नास पुव्वसहसाइं ।
रज्जम्मि गमिय तिच्चिय अट्ठावीसंग-सहियाइं ॥३॥
सहसंबवणे छट्ठेण निग्गओ मग्ग-बहुल-छट्ठीए ।
नरसहसजुओ पुस्साओ पायसं परदिणे पत्तो ॥४॥
चउवासे तं कत्तिय-सिय-तइयाए तहिं वणे नाणं ।
लद्धूण गणहराणं अट्ठासीई तए ठविया ॥५॥
दो' लक्खा साहूणं लक्खं अज्जाण वीस सहसा य ।
तुह भत्तिरया अजिओ सुतारया जुद्धविरिओ य ॥६॥
वयमडवीसंगूणं लक्खं पुव्वाण लक्ख-दुगमाउं ।
चंदप्पहाओ सागरकोडीण गयाइ नवईए ॥७॥
भद्दवय-सुद्ध-नवमी समणसहस्सेण तंसि सम्मेए ।
पत्तो ठाणमणंतं ममावि वासं तहिं देहि ॥८॥

सिरि सीयलणाह-थुत्तं

सीयलनाह ! महीअलंमि णमो संताववज्जियं काउं ।
वइसाह-कसिण-छट्ठीइ पाणयाओ वइन्नोसि ॥१॥
भद्दिलपुरंमि दढरह-नंदाणं माहबारसीइ तुमं ।
कसिणाइ कणयवन्नो उप्पन्नो नवइ-धणुमाणो ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरिवच्छलंछण तुमं कुमरो पणुवीस पुव्व-सहसाइं ।
दुगुणाइं निवो छट्ठाउ मणुय-सहसेण सहसंबे ॥३॥
नीहरिओ जम्म-तिहीइ परदिणे पायसं पुणव्वसुणा ।
दिन्नं वास-तिगंते पोससिय-चउद्दसीइ दिणे ॥४॥
तम्मि वणे वरनाणं तुहासि इगसीइ गणहराणं च ।
साहूण सयसहस्सं अज्जालक्खं तु छहि अहियं ॥५॥
तुह पहुभत्ता बंभोऽसोया सीमंधरो य धरणीसो ।
पणुवीस-पुव्व-सहसा वयमाउं पुव्वलक्खं तु ॥६॥
सिरि सुविहिजिणिंदाओ गयम्मि नवगम्मि अयर-कोडीणं ।
वइसाह-बहुल-बीयाइ साहुसहसेण सम्मेए ॥७॥
नाणेहिं तिहिवि चउहि वि पंचहि वि जं न पत्तपुव्वं तु ।
तक्कालि च्चिय तं अक्खरपयं पत्त तुज्झ नमो ॥८॥

❀

सिरि सेयंसणाह-थुत्तं

तिहुयणलच्छीकन्नावयंस-**सेयंस** ! तंसि अच्चुयओ ।
सीहपुरे अवइन्नो बहुलाए जिट्ठ-छट्ठीए ॥१॥
जाओसि विण्हु-विण्हूण बारसीइ कसिणाए ।
गंडयमंडिय तं कणयसच्छहो असीइधणुमाणो ॥२॥
इगवीसवासलक्खे कुमरो दुगुणाइं ताइं कयरज्जो ।
छट्ठेणं फग्गुण-तेरसीइ-कसिणाइ सहसंबे ॥३॥
नर-सहसजुओ नीहरिय परदिणे नंदपायसं पत्तो ।
वासेहि दोहि मासे अमावसाए वणे तत्थ ॥४॥
जायं नाणं गणहर छहत्तरी साहुसहस चुलसी य ।
अज्जा तिसहस्साहिय लक्खं तुह ईसरो भत्ती ॥५॥
तह माणसी तिविट्ठु हरी य इगवीस-वास-लक्खाइं ।
तुह वयमाउं चउगुण-मणंतरं सीयलजिणाओ ॥६॥
छव्वीस सहस्साहिय छावट्ठी-वासलक्ख-सहिएण ।
सागरसएण ऊणाइ अयरकोडीओ गमियायो ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मेए कसिणाए सावण तइयाए समणसहसजुओ ।
तंसि गओ लोयग्गं हत्थालंबं ममं देसु ॥८॥

❀

सिरि वासुपुज्जणाह-थुत्तं

सिरिवासुपुज्ज ! उज्जोइउं जयं जिट्ठ-सुद्ध-नवमीए ।
तं पाणयकप्पाओ चविउं चंपाइ संपत्तो ॥१॥
जाओ वसुपुज्ज-जयाण फग्गुणे कसिण-चउद्दसीइ तुमं ।
महिसंक-रत्तवन्नो सत्तरिधणुमाण गयमाण ॥२॥
अट्ठारसयसहस्सा वासा कुमरोसि तं चउत्थेणं ।
फग्गुण-अमावसाए विहारगेहम्मि नीहरिओ ॥३॥
छहिं निवसएहि सहिओ बीयदिणे पायसं सुनंदाओ ।
पत्तोसि वासमेगं छउमत्थो विहरिओ नाह ! ॥४॥
माहे सिय-बीयाए विहारगेहम्मि पत्तनाणेणं ।
छावट्ठी लोयहिया विहिया गणहारिणा तुमए ॥५॥
बावत्तरी सहस्सा मुणीण अज्जाउ लक्खमेगं तु ।
तुह भत्ता य कुमारो पयंड-देवी दुविट्ठु हरी ॥६॥
चउपन्न-वास-लक्खो वयम्मि बावत्तरी तुह(हा)उम्मि ।
चउपन्ना सागरेहिं गएहिं सेयंस-नाहाओ ॥७॥
छहिं साहुसएहिं समं आसाढ-चउद्दसीइ सुद्धाए ।
चंपाइ तंसि संपत्तसिवसुहो सिवसुहं देसु ॥८॥

❀

सिरि विमलणाह-थुत्तं

विमलजिणिंद ! सुरिंदेहिं तंसि महिओ महीइ इंतो वि ।
वइसाह-सुद्ध-बारसि विमुक्कसहसार गुणसार ॥१॥
कंपिल्लपुरे जाओ नाह ! तुमं माह-सुद्ध-तइयाए ।
सामा-कयवम्म-सुओ सट्ठिधणुच्चो वराहजुओ ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तवियम(त?)वणिज्जगोरो कुमार-वासम्मि वास-लक्खाइं ।
पनरस रज्जम्मि य दुगुणियाइं गमिऊण छट्ठेणं ॥३॥
माह-सिय सहस्संबे माह-सिय-चउत्थि गहियसामन्नो ।
नर-सहसजुओ जय-पायसं च पत्तोसि बीयदिणे ॥४॥
वास-दुगंते फुरिया नाणसिरी पोस-सुद्ध-छट्ठीए ।
तम्मि वणे गणहारी सत्तावन्ना तए विहिया ॥५॥
अडसट्ठी मुणि सहसा अज्जाउ लक्ख-मट्ठसयसहियं ।
तुह देव ! सेवगा पुण छम्मुह विइया सयंभु हरी ॥६॥
पन्नरस वासलक्खा तुब्भ वयं सट्ठिमेव सव्वाऊ ।
तीसाइ सागरेहिं गएहिं जिण वासुपुज्जाओ ॥७॥
आसाढ-कसिण-सत्तमि समत्तनीसेसकम्मनिम्महण ।
छहिं मुणिसहसेहिं समं सम्मेए निव्वुय नमो ते ॥८॥

सिरि अणंतणाह-थुत्तं

जिणनाह ! **अणंत**मणंतराउ भवियाण मोहमवणेउं ।
कसिणाए सावण-सत्तमीइ तं पाणयाउ चुओ ॥१॥
जाओसि अउज्झाए सेणंको सीहसेण-सुजसाण ।
वइसाह-तेरसीए कसिणाइ सुवन्नवन्न तुमं ॥२॥
पन्नासधणुसरीरो वासाणऽद्धट्ठमा सय-सहस्सा ।
कुमरो निवो य दुगुणा मणुय-सहस्सेण सहसंबे ॥३॥
कयछट्ठो कसिणाए वइसाह-चउद्दसीइ गहियवओ ।
विजयाओ परमन्नं अन्नंमि दिणंमि पत्तोसि ॥४॥
वासतिगंते संजम-तिहीइ पत्तं तहिं वणे नाणं ।
तुह गणहर पन्नासा कमेण मुणि साहुणी सहसा ॥५॥
छावट्ठी छावट्ठी भत्ता पायाल-अंकुसाउ तहा ।
पुरिसुत्तमो हरी वयमद्धट्ठमवासलक्खाइं ॥६॥
वासाण तीस लक्खा सव्वाउं विमलजिणवरिंदाओ ।
सागरनवगम्मि गए सह सत्तहिं मुणिसहस्सेहिं ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्त-सिय-पंचमीए कम्मणमोरालियं च सम्मेए ।
मुत्तूण तणुं तणुवज्जियपयं पत्त तुज्झ नमो ॥८॥

सिरि धम्मणाह-थुत्तं

सिरिधम्मनाह ! धम्मम्मि ठाविउं भवियजणमिणं विजया।
वइसाह-सुद्ध-सत्तमि कयगब्भवयार तं नमिमो ॥१॥
ते भाणु-सुव्वयाणं रयणपुरे माह-सुद्ध-तइयाए ।
वज्जंक कंचणप्पह पणचत्तधणुच्च जाओसि ॥२॥
अड्डाइज्जा पंचम कुमरो य निवो य वास सयसहसा ।
माह-सिय-तेरसीए कयछट्ठो वप्पगाइ तुमं ॥३॥
सहसेण निवाण विणिग्गउसि गहिऊण धम्मसीहाओ ।
परमन्नमन्नदियहे वासदुगं गमिय-छउमत्थो ॥४॥
पत्तोसि वप्पगाए वरनाणं पोस-पुन्निमाइ तुमं ।
तुह गणहरा तिचत्ता मुणिणो चउसट्ठिसहसा य ॥५॥
अज्जाउ चउसयाहिय बिसट्ठि सहसा य निट्ठियकसाया ।
भत्तिपरा तुह किन्नर-पन्नत्ती पुरिससीह हरी ॥६॥
अड्डाइज्जा लक्खा वासाण वयं दसेव सव्वाऊ ।
अंतरमणंतजिणओ जणिउं सागरचउक्केण ॥७॥
जिट्ठसिय-पंचमीए अट्ठुत्तरमुणिसएण सम्मेए ।
होउमजोगी पत्तोसि जं पयं तं पयं देसु ॥८॥

सिरि संतिणाह-थुत्तं

सिरिसंतिनाह ! सव्वोवसग्गनिग्गहकएण पुहईए ।
भद्दवय-कसिण-सत्तमि सव्वट्ठचुयं नमामि तुमं ॥१॥
जाओसि गयउरे विस्ससेण - अइराण चत्तधणुमाणो ।
हरिणंक कणयलद्धो जिट्ठासियतेरसीइ तुमं ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणुवीसवाससहसा कुमार-मंडलिय-चक्कवट्टिपए ।
पत्तेयं भविय तुमं नरिंद-सहसेण सहसंबे ॥३॥
कयछट्ठो जिट्ठ-चउद्दसीइ कसिण्ण(णा?)इ विरइमणुरत्तो ।
पत्तोसि सुमित्ताओ परमन्नमणंतरम्मि दिणे ॥४॥
वासंते तम्मि वणे लद्धूणं सुद्ध-पोस-नवमीए ।
नाणवरं वरसीसा छत्तीसा गणहरा विहिया ॥५॥
मुणिणो बिसट्ठिसहसा अज्जा इगसट्ठिसहस-छसया य ।
गरुडो निव्वाणी तुह भत्ता कोणालयो य निवो ॥६॥
वाससहस्साणि वयं पणुवीसं वासलक्खमाउं च ।
पाऊण पल्लरहिए गयम्मि धम्माउ अयरतिगे ॥७॥
नवसाहुसएहिं समं जिट्ठासिय-तेरसीइ सम्मेए ।
मुत्तुं मुत्तिमसारं सारं पत्तोसि तुज्झ नमो ॥८॥

सिरि कुंथुणाह-थुत्तं

सिरिकुंथुनाह ! थुणिमो परमत्थ-परोवयार-करणत्थं ।
सव्वट्ठाओ चवणं तुह सावण-कसिण-नवमीए ॥१॥
नागपुरे सूर-सिरीण कसिण-वइसाह-चउद्दसीइ तुमं ।
छगलंछण कणयप्पह पणतीसधणुच्च जाओसि ॥२॥
कुमरो तह मंडलिओ चक्कीवि य भविय वास-सहसाइं ।
पाओण-चउव्वीसं पत्तेयं नरसहस्सजुओ ॥३॥
छट्ठेण कसिण-वइसाह-पंचमी चरिय चरिय सहसंबे ।
बीयदिणम्मि पवन्नो परमन्नं वग्घसीहाओ ॥४॥
सोलसवरिसेहिं तहिं उज्जाणे चित्त-सुद्ध-तइयाए ।
हय-घाइकम्म तुमए पणतीसं गणहरा विहिया ॥५॥
साहू सट्ठि-सहस्सा अज्जाओ सट्ठि-सहस छसया य ।
तुह नाह विहियसेवा गंधव्व-बला कुबेरनिवो ॥६॥
पाऊण चउवीसं पणनवई चेव वास-सहसाइं ।
तुह वयमाउं च गए सिरिसंतिजिणाउ पलियद्धे ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइसाह-पडिवयाए सिणाए दसहिं मुणिसएहिं समं ।
सम्मेयम्मि विमुक्कोसि सेसकम्मेहिं देहि सुहं ॥८॥

सिरि अरणाह-थुत्तं

सिरिअरनाह ! नमो ते भवियाणमणुग्गहिक्कबुद्धीए ।
फग्गुण-सिय-बीयाए सव्वट्ठाओ चुओ तंसि ॥१॥
नागपुरंमि सुदंसण-देवीणं मग्ग-सुद्ध-दसमीए ।
तीसधणूसिय जाओसि नंदवत्तंक कणयपहो ॥२॥
इगवीस-वास-सहसा पत्तेयं कुमर-मंडलिय-चक्की ।
मग्गसिर-सेय-इक्कारसीइ छट्ठेण सहसंबे ॥३॥
नर-सहसेण गिहाओ नीहरिओ परदिणंम्मि परमन्नं ।
अवराइयाउ पत्तो अह तिहिं वरिसेहिं तम्मि वणे ॥४॥
नाणं कत्तिय-सिय-बारसीइ आसाइउं तए विहिया ।
गणहारी तेत्तीसा साहू पन्नाससहसा य ॥५॥
अज्जाण सट्ठि-सहसा भत्ता जक्खिंद-धारिणि-सुभूमा ।
इगवीसवाससहसा तुह वयमाउं तु चुलसीई ॥६॥
पलिओवमचउभागे रहिए वासाण कोडिसहसेणं ।
कुंथुजिणाउ गयम्मी सम्मेए मुणि-सहस्सेण ॥७॥
जम्म-तिहीए कम्मक्खएण संसारउवि नीहरिउ ।
अपुणागमं पयंगम पसीय दंसेसु अप्पाणं ॥८॥

सिरि मल्लिणाह-थुत्तं

सिरिमल्लिनाह ! मिहिलं मोहवसं बोहिउं जयंताओ ।
फग्गुण-सुद्ध-चउत्थीइ इत्थिरूवोऽवइन्नोसि ॥१॥
मग्गसिर-सुद्ध-इक्कारसीइ कुंभ-प्पभावईण तुमं ।
कलसंक नीलवन्नो पणुवीसधणूसिओ जाओ ॥२॥
कुमरोसि वच्छरसयं कुमार अट्ठमेण सहसंबे ।
जम्मतिहीए तिहिं तिहिं नरसएहिं नीहरिओ ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तम्मि दिणे अवरण्हे नाणं पत्तोसि तम्मि चेव वणे ।
जायं पायसमसणं बीयदिणे विस्ससेणाओ ॥४॥
गणहर अट्ठावीसा कमसो तुह साहुणी सहसा ।
चालीसा पणपन्ना भत्ता य कुबेर-वइरोट्टा ॥५॥
तह अजिओ नरनाहो तुहाउ पणपन्नवाससहसाइं ।
सयहीणाइं तु वयं गयम्मि अरजिणवरिंदाओ ॥६॥
वासाण कोडिसहसो सम्मेए पंचपंचहि सहे(ए)हिं ।
साहूण साहुणीणं फग्गुण-सिय-बारसीइ तुमं ॥७॥
उत्तरिय दुत्तराओ अणाइभवपंकओ दुरवयारे ।
निम्मग्गोऽणंतपए अणंतविरिओसि तुज्झ नमो ॥८॥

सिरि मुणिसुव्वयणाह-थुत्तं

सिरिमुणिसुव्वय ! अवराइयाउ अवराइयं पयं पत्तं ।
पुन्नावण सावणपुन्निमाइ उइन्न तुज्झ नमो ॥१॥
रायगिहे सामंगो सुमित्त-पउमावईण जाओसि ।
जिट्ठबहुलट्ठमीए कुम्मंको वीसधणुमाणो ॥२॥
अद्धट्ठमाइं कुमरो वास-सहस्साइं पनरस-नरिंदो ।
होउं नरसहसजुओ नीलगुहाए विहियछट्ठो ॥३॥
सुद्धाए फग्गुण-बारसीइ नीहरिय परदिणे पत्तो ।
तं बंभदत्तपायसमह पक्खूणे गए वरिसे ॥४॥
तम्मि वणे फग्गुण-बारसीइ बहुलाइ लद्ध-नाणस्स ।
अट्ठारस गणहारी तुहसि मुणि तीस-सहसा य ॥५॥
पन्नास सहस्सा साहुणीण भत्ता य वरुण-नरदत्ता ।
विजयनिवोवि य तुह वयमद्धट्ठमवाससहसाइं ॥६॥
तीसं साउं चउपन्न-वास-लक्खेहिं मल्लिनाहाओ ।
जिट्ठ-सिय-नवमीए सम्मेए समण-सहसेणं ॥७॥
भववाडियाइ चउगइचउरं काउं तुमं सभत्तीए ।
पत्तो सिद्धिं मह पहु ! पहुत्तसरिसं फलं देसु ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

⊛

सिरि नमिणाह-थुत्तं

नमिनाह ! नमामि तुमं कयत्थमप्पाणयं विहेउमणो ।
तं पाणयाओ मिहिलं आसोए पुन्निमाइ गओ ॥१॥
जाओसि विजय-वप्पाण सावण-कसिण-अट्ठमीइ तुमं ।
पन्नरसधणूसिय उप्पलंक तवणिज्जरमणिज्ज ॥२॥
अड्ढाइज्जा कुमरो वास-सहसा य पंचनरनाहो ।
होउं सहसंबवणे नर-सहसेणं विहियछट्ठो ॥३॥
आसाढकसिण-नवमीइ निग्गओ परदिणम्मि पत्तोसि ।
परमन्नं दिन्नाओ अह नवमासेहिं तम्मि वणे ॥४॥
मग्गसिरसि इक्कारसि हयनाणावरण गणहरा जाया ।
सत्तदस साहु-साहुणिसहसा वीसेगचत्ता य ॥५॥
भिउडी गंधारी वि य भत्ता हरिसेण चक्कवट्टी य ।
तुह वयमड्ढाइज्जा वाससहस्सा दसाउं च ॥६॥
छसु वच्छरलक्खेसु गएसु मुणिसुव्वयाउ सम्मेए ।
वइसाह-कसिण-दसमीइ सह सहस्सेण साहूणं ॥७॥
सम्मत्ताइगुणेहिं लद्धं तित्थयरनाममइदुलहं ।
मुत्तूण तंपि पत्तोसि मुक्खसोक्खं नमो तुज्झ ॥८॥

⊛

सिरि णेमिणाह-थुत्तं

सिरिनेमिणाह ! मोहेण भुवणमवराइयं तुमं काउं ।
बहुलाए कत्तिय-बारसीइ अवराइयाउ भुओ ॥१॥
जाओसि सिवादेवी-समुद्दविजयाण सोरियपुरम्मि ।
सामंग दसधणूसिय सावण-सिय-पंचमीइ तुमं ॥२॥
संखंक कुमारोच्चिय कुमरत्ते गमिय तिन्नि वाससए ।
सावण-सिय-छट्ठीए छट्ठेणुज्जितगिरिसिहरे ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरवइ-सहसेण समं नीसामन्नं गहेवि सामन्नं ।
वरदिन्नाउ पवन्नो तुमंसि परमन्नमन्नदिणे ॥४॥
चउपन्नदिणाणंते आसोय-अमावसाइ उज्जिंते ।
निम्महियमोह विहिया एक्कारस गणहरा तुमए ॥५॥
अट्ठारस तह चत्ता सहसा साहूण साहुणीणं च ।
भत्ता तुह गोमेहो अंबा कण्हो हरी तह य ॥६॥
सत्त सया वासाणं वयमाउं दस सयाउ नमिजिणओ ।
पणवच्छरलक्खंते आसाढ-सियट्ठमीइ तुमं ॥७॥
पंचहि साहु-सएहिं सह छत्तीसाहिएहिं उज्जंते ।
पत्तोसि पंचमगइं मह पहुं तं चिय गई एक्का ॥८॥

सिरि पासणाह-थुत्तं

सिरिपासनाह ! पसरियमहंतमोहं मणुग्गहिडं(?) ।
तं पाणयाउ चविओ चित्त-चउत्थीइ कसिणाए ॥१॥
वाणारसीइ तं अस्ससेण-वम्माण पोसदसमीए ।
कसिणाइ नीलवन्नो फणिरायविराइओ जाओ ॥२॥
नवहत्थपमाण तुमं तीसं वासाइं वसिय कुमरत्ते ।
अट्ठमतवेण आसमपयम्मि तिहिं नर-सएहिं समं ॥३॥
कसिणाइ पोस-इक्कारसीइ सामन्नमुत्तमं पत्तो ।
बीयदिणे तुह दिन्नं परमन्नं नाह ! धन्नेण ॥४॥
चुलसी-दिणेहिं चित्ते कसिण-चउत्थीइ आसमपयम्मि ।
उल्लसिय-केवलेणं तुमए दस गणहरा विहिया ॥५॥
सोलस तह अडतीसा सहसा मुणि-साहुणीण तुह भत्ता ।
पास-पउमावईउ पसेणई चेव नरनाहो ॥६॥
सत्तरि-वासाइं वयं वाससयं आउ नेमिनाहाओ ।
अद्धट्ठमसय-समहिय-तेसीइं वाससहसेहि ॥७॥
मुणितेत्तीसाय समं सावण-सिय-अट्ठमीइ सम्मेए ।
सिद्धोसि हरसु मोहं मह जह पेच्छामि सामि ! तुमं ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिर वड्डमाण-थुत्तं

सिरिवद्धमाणजिण ! पाणयाउ आसाढ-सुद्ध-छट्ठीए।
भुवणमिणं बोहेउं कुण्डग्गामं तुमं पत्तो ॥१॥
तिसला-सिद्धत्थाणं चित्ते सिय-तेरसीइ सीहंको ।
तं सत्तहत्थकाओ जाओ चामीयरच्छाओ ॥२॥
कुमरोसि वास-तीसं कय-छट्ठो मग्ग-कसिण-दसमीए।
नीहरिय नायसंडे एगो परमन्नमन्नदिणे ॥३॥
पत्तो बहुलाउ गए पक्खाहियसङ्ढ-वासबारसगे ।
उजुवालियाइ तीरे नईइ वइसाहदसमीए ॥४॥
सुद्धाइ लद्धकेवल एक्कारस गणहरा तए विहिया ।
चउद्दस तह छत्तीसा सहसा मुणि-अज्जियाणं च ॥५॥
मायंगजक्ख सिद्धाइयाओ सेणियनिवो य तुह भत्ता ।
वासा बायालीसं दिक्खा बावत्तरी आउं ॥६॥
अड्ढाइज्जसएहिं गएहिं वासाण पासनाहाओ ।
अवसप्पिणीइ गुणनवइपक्खसेसे चउत्थरए ॥७॥
निव्वाणो कत्तियमावसाइ एगोसि तं अपावाए ।
पयडसि जयदीव जयं जह तह कुरु **देवभद्दाइं** ॥८॥

❀ ❀ ❀

C/o. प्राकृत भारती
जयपुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्विंशति जिन ३२ स्थान-कोष्ठक (यन्त्रम्)

तीर्थंकर नाम	च्यवन स्थान	च्यवन तिथि	जन्मभूमि	जन्म तिथि	पिता-नाम	माता-नाम	शरीर-वर्ण	शरीर-मान	लांछन	कुमारकाल	राज्यकाल	दीक्षा तप	दीक्षा तिथि	दीक्षा-स्थान	पारणक	दाता	दीक्षा परिवार	छद्मस्थकाल
ऋषभदेव	सर्वार्थसिद्धि	आषाढ़ कृ० ४	अयोध्या	चै० कृ० ८	नाभि	मरुदेवी	सुवर्णवर्ण	५०० धनुष	वृषभ	२० लाख पूर्व	६३ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	चै० कृ० ८	सिद्धार्थवन	इक्षुरस	श्रेयांस	४०००	१००० वर्ष
अजितनाथ	विजय	वैशाख शु० १३	अयोध्या	माघ शु० ८	जितशत्रु	विजया	सुवर्णवर्ण	४५० धनुष	गज	१८ लाख पूर्व	१ पूर्वांग सहित ५३ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	माघ शु० ९	सहस्राम्रवन	परमान्न	ब्रह्मदत्त	१०००	१२ वर्ष
सम्भवनाथ	सप्तम ग्रैवेयक	फा० शु० ८	श्रावस्ती	मार्ग० शु० १४	जितारि	सेना	सुवर्णवर्ण	४०० धनुष	अश्व	१५ लाख पूर्व	४ पूर्वांग सहित ४४ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	मार्ग० शु० १५	सहस्राम्रवन	परमान्न	सुरेन्द्रदत्त	१०००	१४ वर्ष
अभिनन्दन	जयन्त	वै० शु० ४	अयोध्या	माघ शु० २	संवर	सिद्धार्था	सुवर्णवर्ण	३५० धनुष	बंदर	१२½ लाख पूर्व	८ पूर्वांग सहित ३६½ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	माघ शु० १२	सहस्राम्रवन	परमान्न	इन्द्रदत्त	१०००	१८ वर्ष
सुमतिनाथ	जयन्त	श्रा० शु० २	अयोध्या	वै० शु० ८	मेघ	मंगला	सुवर्णवर्ण	३०० धनुष	क्रौंच पक्षी	१० लाख पूर्व	२९ लाख १२ पूर्वांग	नित्यभक्त	वै० शु० ९	सहस्राम्रवन	परमान्न	पद्म	१०००	२० वर्ष
पद्मप्रभस्वामी	नवम ग्रैवेयक	माघ कृ० ६	कौशाम्बी	का० कृ० १२	धर	सुसीमा	रक्तवर्ण	२५० धनुष	पद्म	७½ लाख १६ पूर्वांग	२१½ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	का० कृ० १३	सहस्राम्रवन	परमान्न	सोमदेव	१०००	६ महीने
सुपार्श्वनाथ	मध्यम ग्रैवेयक	भाद्र कृ० ८	वाराणसी	ज्ये० शु० १२	प्रतिष्ठ	पृथ्वी	सुवर्णवर्ण	२०० धनुष	स्वस्तिक	५ लाख पूर्व	२० पूर्वांग सहित १४ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	ज्ये० शु० १३	सहस्राम्रवन	परमान्न	महेन्द्र	१०००	९ महीने
चन्द्रप्रभस्वामी	वैजयन्त	चैत्र कृ० ५	चन्द्रपुरी	पौष कृ० १२	महासेन	लक्ष्मणा	श्वेतवर्ण	१५० धनुष	चन्द्र	२½ लाख पूर्व	२४ पू० अ० ६½ लाख पूर्व	षष्ठ भक्त	पौष कृ० १३	सहस्राम्रवन	परमान्न	सोमदत्त	१०००	३ महीने
सुविधिनाथ	आनत	फाल्गुन कृ० ९	काकन्दी	मार्ग० कृ० ५	सुग्रीव	रामा	श्वेतवर्ण	१०० धनुष	मकर	५०००० पूर्व	२८ पू० अ० ५०००० पूर्व	षष्ठ भक्त	मार्ग० कृ० ६	सहस्राम्रवन	परमान्न	पुष्य	१०००	४ वर्ष
शीतलनाथ	प्राणत	वै० कृ० ६	भद्दिलपुर	माघ कृ० १२	दृढरथ	नन्दा	सुवर्णवर्ण	९० धनुष	श्रीवत्स	२५,००० पूर्व	५०,००० पूर्व	षष्ठ भक्त	माघ कृ० १२	सहस्राम्रवन	परमान्न	पुनर्वसु	१०००	३ वर्ष
श्रेयांसनाथ	अच्युत	ज्ये० कृ० ६	सिंहपुरी	फा० कृ० १२	विष्णु	विष्णु	सुवर्णवर्ण	८० धनुष	गैंडा	२१ लाख वर्ष	४२ लाख वर्ष	षष्ठ भक्त	फा० कृ० १३	सहस्राम्रवन	परमान्न	नन्द	१०००	२ वर्ष
वासुपूज्य	प्राणत	ज्ये० शु० ९	चम्पापुरी	फा० कृ० १४	वसुपूज्य	जया	रक्तवर्ण	७० धनुष	महिष	१८ लाख वर्ष	५४ लाख वर्ष	चतुर्थ भक्त	फा० कृ० ३०	विहारगृह	परमान्न	सुनन्द	६००	१ वर्ष
विमलनाथ	सहस्रार	वै० शु० १२	कम्पिलपुर	माघ शु० ३	कृतवर्मा	श्यामा	सुवर्णवर्ण	६० धनुष	शूकर	१५ लाख वर्ष	३० लाख वर्ष	षष्ठ भक्त	माघ शु० ४	सहस्राम्रवन	परमान्न	जय	१०००	२ वर्ष
अनन्तनाथ	प्राणत	श्रा० कृ० ७	अयोध्या	वै० कृ० १३	सिंहसेन	सुयशा	सुवर्णवर्ण	५० धनुष	श्येन	७½ लाख वर्ष	१५ लाख वर्ष	षष्ठ भक्त	वै० कृ० १४	सहस्राम्रवन	परमान्न	विजय	१०००	३ वर्ष
धर्मनाथ	विजय	वै० शु० ७	रत्नपुरी	माघ शु० ३	भानु	सुव्रता	सुवर्णवर्ण	४५ धनुष	वज्र	२½ लाख वर्ष	५ लाख वर्ष	षष्ठ भक्त	माघ शु० १३	सहस्राम्रवन	परमान्न	धर्मसिंह	१०००	२ वर्ष
शान्तिनाथ	सर्वार्थसिद्धि	भाद्र कृ० ७	हस्तिनापुर	ज्ये० कृ० १३	विश्वसेन	अचिरा	सुवर्णवर्ण	४० धनुष	मृग	२५ हजार वर्ष	५० हजार वर्ष	षष्ठ भक्त	ज्ये० कृ० १४	सहस्राम्रवन	परमान्न	सुमित्र	१०००	१ वर्ष
कुन्थुनाथ	सर्वार्थसिद्धि	श्रा० कृ० ९	हस्तिनापुर	वै० कृ० १४	सूर	श्री	सुवर्णवर्ण	३५ धनुष	बकरा	२३,७५० हजार वर्ष	४७,५०० हजार वर्ष	षष्ठ भक्त	वै० कृ० ५	सहस्राम्रवन	परमान्न	व्याघ्रसिंह	१०००	१६ वर्ष
अरनाथ	सर्वार्थसिद्धि	फा० शु० २	हस्तिनापुर	मार्ग० शु० १०	सुदर्शन	देवी	सुवर्णवर्ण	३० धनुष	नन्द्यावर्त	२१ हजार वर्ष	६३ हजार वर्ष	षष्ठ भक्त	मार्ग० शु० ११	सहस्राम्रवन	परमान्न	अपराजित	१०००	३ वर्ष
मल्लिनाथ	जयन्त	फा० शु० ४	मिथिला	मार्ग० शु० ११	कुम्भ	प्रभावती	नीलवर्ण	२५ धनुष	कलश	१०० वर्ष	—	अष्टम भक्त	मार्ग० शु० ११	सहस्राम्रवन	परमान्न	विश्वसेन	३००	अहोरात्रि
मुनिसुव्रत	अपराजित	श्रा० शु० १५	राजगृही	ज्ये० कृ० ८	सुमित्र	पद्मावती	श्यामवर्ण	२० धनुष	कच्छप	७½ हजार वर्ष	१५ हजार वर्ष	षष्ठ भक्त	फा० शु० १२	नीलगुहा	परमान्न	ब्रह्मदत्त	१०००	११½ मास
नमिनाथ	प्राणत	आश्विन शु० १५	मिथिला	श्रा० कृ० ८	विजय	वप्रा	सुवर्णवर्ण	१५ धनुष	नीलकमल	२½ हजार वर्ष	५ हजार वर्ष	षष्ठ भक्त	आ० कृ० ९	सहस्राम्रवन	परमान्न	दिन्न	१०००	९ मास
नेमिनाथ	अपराजित	का० कृ० १२	शौरीपुर	श्रा० शु० ५	समुद्र विजय	शिवादेवी	श्यामवर्ण	१० धनुष	शंख	३०० वर्ष	—	षष्ठ भक्त	श्रा० शु० ६	उज्जयन्त	परमान्न	वरदत्त	१०००	५४ दिन
पार्श्वनाथ	प्राणत	चैत्र कृ० ४	वाराणसी	पौष कृ० १०	अश्वसेन	वामादेवी	नीलवर्ण	९ हाथ	सर्प	३० वर्ष	—	अष्टम भक्त	पौष कृ० ११	आश्रमपद	परमान्न	धन्य	३००	८४ दिन
महावीरस्वामी	प्राणत	आषाढ़ शु० ६	कुण्डग्राम	चै० शु० १३	सिद्धार्थ	त्रिशला	सुवर्णवर्ण	७ हाथ	सिंह	३० वर्ष	—	षष्ठ भक्त	मार्ग० कृ० १०	ज्ञातखण्ड	परमान्न	बहुल	एकाकी	१२½ वर्ष १ पक्ष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान-नगरी	ज्ञान-तिथि	गणधर संख्या	साधु-सं०	साध्वी सं०	शासनदेव	शासनदेवी	प्रमुख श्रोता	केवलपर्याय	आयुष्य	मोक्ष-परिवार	अन्तरकाल	निर्वाणतिथि	निर्वाण-धाम तीर्थ
पुरिमताल-अग्रग्राम	फा० कृ० ११	८४	८४,०००	३,००,०००	गोमुख	अप्रतिचक्रा	भरत	१ लाख पूर्व	८४ लाख पूर्व	१००००	३ आरा के ८४ लाख पूर्व ३ वर्ष ८½ महीना शेष	माघ कृ० १३	अष्टापद गिरि
अयोध्या-सहस्राम्र	पौष शु० ११	९५	१,००,०००	३,३०,०००	महायक्ष	अजितबला	सगर चक्री	१ लाख पूर्व	७२ लाख पूर्व	१०००	५० लाख कोटि सागरोपम	चैत्र शु० ५	सम्मेतशिखर
श्रावस्ती-सहस्राम्र	कार्तिक कृ० ५	१०२	२,००,०००	३,३६,०००	त्रिमुख	दुरितारि	मित्रसेन	१ लाख पूर्व	६० लाख पूर्व	१०००	३० लाख कोटि सागरोपम	चैत्र शु० ५	सम्मेतशिखर
अयोध्या-सहस्राम्र	पौ० शु० १४	११६	३,००,०००	६,३०,०००	यक्षनायक	काली	मित्रवीर्य	१ लाख पूर्व	५० लाख पूर्व	१०००	१० लाख कोटि सागरोपम	वै० शु० ८	सम्मेतशिखर
अयोध्या-सहस्राम्र	चैत्र शु० ११	१००	३,२०,०००	५,३०,०००	तुम्बरु	महाकाली	सत्यवीर्य	१ लाख पूर्व	४० लाख पूर्व	१०००	९ लाख कोटि सागरोपम	चैत्र शु० ९	सम्मेतशिखर
कौशाम्बी-सहस्राम्र	चैत्र शु० १५	१०७	३,३०,०००	४,२०,०००	कुसुम	अच्युता	अजितसेन	१ लाख पूर्व	३० लाख पूर्व	३०८	९०,००० कोटि सागरोपम	मार्ग० कृ० ११	सम्मेतशिखर
वाराणसी-सहस्राम्र	फा० कृ० ६	९५	३,००,०००	४,३०,०००	मातंग	शान्ता	दानवीर्य	१ लाख पूर्व	२० लाख पूर्व	५००	९,००० कोटि सागरोपम	फा० कृ० ७	सम्मेतशिखर
चन्द्रपुरी-सहस्राम्र	फा० कृ० ७	९३	२,५०,०००	३,८०,०००	विजय	भृकुटि	मघवा	१ लाख पूर्व	१० लाख पूर्व	१०००	९०० कोटि सागरोपम	भादवा कृ० ७	सम्मेतशिखर
काकंदी-सहस्राम्र	कार्तिक शु० ३	८८	२,००,०००	१,२०,०००	अजित	सुतारका	युद्धवीर्य	५० हजार पूर्व	२ लाख पूर्व	१०००	९० कोटि सागरोपम	भादवा शु० ९	सम्मेतशिखर
भद्दिलपुर-सहस्राम्र	पौष कृ० १४	८१	१,००,०००	१,००,००६	ब्रह्मा	अशोका	सीमन्धर	२५ हजार पूर्व	१ लाख पूर्व	१०००	९ कोटि सागरोपम	वैशाख कृ० २	सम्मेतशिखर
सिंहपुरी-सहस्राम्र	माघ कृ० ३०	७६	८४,०००	१,०३,०००	ईश्वर	मानवी	त्रिपृष्ठ	२१ लाख वर्ष	८४ लाख वर्ष	१०००	६६,२६,००० वर्ष कम १ कोटि सागर	श्रावण कृ० ३	सम्मेतशिखर
चम्पापुरी-सहस्राम्र	माघ शुक्ल २	६६	७२,०००	१,००,०००	कुमार	प्रचण्डा	द्विपृष्ठ	५४ लाख वर्ष	७२ लाख वर्ष	६००	५४ सागरोपम	आषाढ शु० १४	चम्पापुरी
कम्पिलपुर-सहस्राम्र	पौष शु० ६	५७	६८,०००	१,००,८००	षण्मुख	विदिता	स्वयंभू	१५ लाख वर्ष	६० लाख वर्ष	६००	३० सागरोपम	आषाढ कृ० ७	सम्मेतशिखर
अयोध्या-सहस्राम्र	वैशाख कृ० १४	५०	६६,०००	६२,०००	पाताल	अंकुशा	पुरुषोत्तम	७४९९९७ वर्ष	३० लाख वर्ष	७००	९ सागरोपम	चैत्र शु० ५	सम्मेतशिखर
रत्नपुरी-सहस्राम्र	पौष शु० १५	४३	६४,०००	६२,४००	किन्नर	प्रज्ञप्ति	पुरुषसिंह	२४९९९८ वर्ष	१० लाख वर्ष	१०८	४ सागरोपम	ज्येष्ठ शु० ५	सम्मेतशिखर
हस्तिनापुर-सहस्राम्र	पौष शु० ९	३६	६२,०००	६१,६००	गरुड	निर्वाणी	कोणालक	२५ हजार वर्ष	१ लाख वर्ष	९००	३ सागरोपम	ज्येष्ठ कृ० १३	सम्मेतशिखर
हस्तिनापुर-सहस्राम्र	चैत्र शु० ३	३५	६०,०००	६०,६००	गंधर्व	बला	कुबेर	२३७५० वर्ष	९५ हजार वर्ष	१०००	१/२ पल्योपम	वैशाख कृ० १	सम्मेतशिखर
हस्तिनापुर-सहस्राम्र	कार्तिक शु० १२	३३	५०,०००	६०,०००	यक्षराज	धारिणी	सुभूम	२१ हजार वर्ष	८४ हजार वर्ष	१०००	१ हजार कोटि कम पल्योपम का चतुर्थांश	मार्ग० शु० १०	सम्मेतशिखर
मिथिला-सहस्राम्र	मार्गशीर्ष शु० ११	२८	४०,०००	५५,०००	कुबेर	वैरोट्या	अजित	५४९०० हजार वर्ष	५५ हजार वर्ष	५००	१ हजार कोटि वर्ष	फाल्गुन शु० १२	सम्मेतशिखर
राजगृही-सहस्राम्र	फाल्गुन कृ० १२	१८	३०,०००	५०,०००	वरुण	नरदत्ता	विजय	७५०० वर्ष	३० हजार वर्ष	१०००	५४ लाख वर्ष	ज्येष्ठ कृ० ९	सम्मेतशिखर
मिथिला-सहस्राम्र	मार्गशीर्ष शु० ११	१७	२०,०००	४१,०००	भृकुटि	गान्धारी	हरिषेण	२५०० वर्ष	१० हजार वर्ष	१०००	६ लाख वर्ष	वैशाख कृ० १०	सम्मेतशिखर
उज्जयन्तगिरि-सह०	आश्विन कृ० ३०	११	१८,०००	४०,०००	गोमेध	अम्बिका	कृष्ण	७०० वर्ष	१ हजार वर्ष	५३६	५ लाख वर्ष	आषाढ शु० ८	उज्जयन्त गिरि
वाराणसी-सहस्राम्र	चैत्र कृ० ४	१०	१६,०००	३८,०००	पार्श्व	पद्मावती	प्रसेनजित	७० वर्ष	१ सौ वर्ष	३३	८३ हजार ७५० वर्ष	श्रावण शु० ८	सम्मेतशिखर
ऋजुबालिका नदी	वैशाख शु० १०	११	१४,०००	३६,०००	मातंग	सिद्धायिका	श्रेणिक	४२ वर्ष	७२ वर्ष	एकाकी	[illegible]	कार्तिक वदि ३०	पावापुरी

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org